| क्रमांक | अनुसंधान परिषद/ राष्ट्रीय संस्थान | पहलों/परिणामों का विवरण |
|---|---|---|
| 1. | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान | राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान, राष्ट्रीय औषध विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (एनआईपीईआर), कोलकाता, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) खड़गपुर और कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) अस्पताल, रांची के सहयोग से निम्नलिखित शीर्षक के तहत एक परियोजना का संचालन कर रहा है (यह परियोजना अभी जारी है):<br><br>i. पोडोफ़ाइलम पेल्टैटम मदर टिंचर और इसके तनुकरणों का हेपेटोसेल्यूलर कार्सिनोमा पर आणविक क्रियाविधि का अध्ययन: एक इन विवो अध्ययन"<br>(एनआईपीईआर, कोलकाता के साथ)<br><br>ii. निमोनिया और गंभीर सूजन में होम्योपैथिक दवाओं के बहुघटक उपचार की आधारभूत क्रियाविधि को उजागर करने के दृष्टिकोण। (आईआईटी, खड़गपुर)<br><br>iii. पेरियोडोंटाइटिस के रोगियों में गैर-सर्जिकल पेरियोडोंटल थेरेपी के सहायक के रूप में हाइपरिकम परफोरेटम मदर टिंचर (क्यू) का कुल एंटीऑक्सीडेंट क्षमता पर प्रभाव - एक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षण। (ईएसआईसी अस्पताल, रांची)।<br><br>एनआईएच सीएमई योजना और अन्य प्रशिक्षण और संकाय विकास कार्यक्रमों के माध्यम से आयुष आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को भी बढ़ावा देता है। |

| | | |
|---|---|---|
| | | |
| **2.** | उत्तर पूर्वी आयुर्वेद एवं होम्योपैथी संस्थान(एनईआईएएच) | वर्तमान में एनईआईएएच, शिलांग द्वारा दो नैदानिक अनुसंधान कार्य किए जा रहे हैं।<br><br>i. आयुर्स्वास्थ्य योजना के अंतर्गत आयुर्वेद अनुसंधान जिसका शीर्षक है "मेघालय के पूर्वी खासी हिल जिले के मावपात और मायलीम ब्लॉक में आदिवासी महिलाओं (18 से 45 वर्ष की आयु) में लौह की कमी से होने वाले एनीमिया (आईडीए) के लिए आयुर्वेद हस्तक्षेपों को बढ़ावा देना"।<br><br>ii. टीम स्मार्ट 3.0 कार्यक्रम के अंतर्गत, वृद्ध वयस्कों में एनीमिया के प्रबंधन में पुनर्नवड़ी मंडुरा की प्रभावशीलता पर एक सामुदायिक-आधारित अध्ययन नामक अनुसंधान परियोजना। |
| **3.** | योग और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (सीसीआरवाईएन) | **पहल-** सीसीआरवाईएन ने शोधकर्ताओं, योग पेशेवरों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के लिए अनुसंधान परियोजनाएं, सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम, अनुसंधान पद्धति कार्यशालाएं, संकाय विकास कार्यक्रम और क्षमता निर्माण पहल शुरू की हैं।<br><br>**परिणाम-** इन पहलों ने प्रशिक्षित योग पेशेवरों, शोधकर्ताओं, थेरेपिस्टों, प्रशिक्षकों और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के समूह को मजबूत करके रोजगार और उद्यमिता के अवसरों को बढ़ाया |

| | | |
|---|---|---|
| | | है, साथ ही योग और प्राकृतिक चिकित्सा स्वास्थ्य केंद्रों, प्रशिक्षण संस्थानों और समुदाय-आधारित स्वास्थ्य संवर्धन गतिविधियों के माध्यम से स्वरोजगार को बढ़ावा दिया है। |
| **4.** | राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) | जयपुर स्थित राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान (एनआईए) ने आयुष आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की हैं।<br><br>i. संस्थान निर्धारित शैक्षणिक और नियामक प्रावधानों के अनुसार स्नातकोत्तर (एमडी) और डॉक्टरेट (पीएच.डी.) कार्यक्रम संचालित करता है। साक्ष्य-आधारित आयुर्वेद अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, विभिन्न शैक्षणिक विभाग अनुसंधान परियोजनाएं, नैदानिक अध्ययन और बहुविषयक सहयोगात्मक अनुसंधान करते हैं।<br><br>ii. अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को मजबूत करने के लिए, संस्थान आयुष मंत्रालय के मार्गदर्शन में नियमित रूप से सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम आयोजित करता है, साथ ही अनुसंधान पद्धति, वैज्ञानिक लेखन, जैव सांख्यिकी और आयुर्वेद के उभरते क्षेत्रों पर कार्यशालाएं, सेमिनार और प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करता है।<br><br>iii. इसके अलावा, संस्थान स्वयं पोर्टल के माध्यम से डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देता है। संकाय सदस्यों और शोधार्थियों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक, अनुसंधान और क्षमता-निर्माण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। |

| | | |
|---|---|---|
| | | इन पहलों ने आयुर्वेद शिक्षा, साक्ष्य-आधारित अनुसंधान और संस्थागत क्षमता निर्माण को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। |
| **5.** | राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) | **पहल -** राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) ने एक समर्पित अनुसंधान विभाग और स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर) में पंजीकृत संस्थागत नैतिकता समिति (आईईसी) की स्थापना करके अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को मजबूत किया है। संस्थान ने संकाय विकास कार्यक्रम, अनुसंधान पद्धति कार्यशालाएं, गुड क्लिनिकल प्रैक्टिस (जीसीपी) प्रशिक्षण, वैज्ञानिक लेखन कार्यशालाएं, सतत चिकित्सा शिक्षा (सीएमई) कार्यक्रम और राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किए हैं ताकि संकाय सदस्यों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच अनुसंधान दक्षता को बढ़ाया जा सके। इसने योग और प्राकृतिक चिकित्सा में नैदानिक अनुसंधान, अवलोकन अध्ययन, व्यवस्थित समीक्षा, समुदाय-आधारित और सहयोगात्मक अनुसंधान को बढ़ावा दिया है, क्लिनिकल ट्रायल रजिस्ट्री-इंडिया (सीटीआरआई) में नैदानिक अध्ययनों के पंजीकरण को प्रोत्साहित किया है, सहकर्मी-समीक्षित पत्रिकाओं में अनुसंधान निष्कर्षों के प्रकाशन को सुगम बनाया है, अनुसंधान प्रशासन और प्रकाशन नैतिकता के लिए मानक संचालन प्रक्रियाएं (एसओपी) विकसित की हैं, और प्रयोगशाला विकास, डिजिटल अनुसंधान संसाधनों और शोधकर्ताओं के लिए सांख्यिकीय सहायता के माध्यम से अनुसंधान अवसंरचना को मजबूत किया है।<br><br>**परिणाम-** राष्ट्रीय प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान (एनआईएन) ने विशेषीकृत शैक्षणिक और कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम |

| | | |
|---|---|---|
| | | से आयुष क्षेत्र में रोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा देने में योगदान दिया है। अनुसंधान पद्धति में फैलोशिप कार्यक्रम ने अनुसंधान डिजाइन, जैव सांख्यिकी, वैज्ञानिक लेखन, नैतिकता और साक्ष्य निर्माण में दक्षता को मजबूत किया है, जिससे प्रतिभागियों को अनुसंधान, शिक्षा और डॉक्टरेट अध्ययन में करियर के लिए तैयार किया गया है। थेरेपिस्ट असिस्टेंट ट्रेनिंग कोर्स (टीएटीसी) ने प्राकृतिक चिकित्सा अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों, योग संस्थानों और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में रोजगार के लिए थेरेपी सहायकों का एक कुशल कार्यबल विकसित किया है। इसके अतिरिक्त, ओजोन थेरेपी में सर्टिफिकेट कार्यक्रम, एक्यूपंक्चर में फैलोशिप कार्यक्रम और जीवनशैली चिकित्सा में फैलोशिप कार्यक्रम ने स्वास्थ्य पेशेवरों को विशेषीकृत नैदानिक कौशल से लैस किया है, जिससे वे अपने कार्यक्षेत्र का विस्तार करने, स्वतंत्र क्लीनिक और स्वास्थ्य सेवाएं स्थापित करने और अस्पतालों, स्वास्थ्य केंद्रों और एकीकृत स्वास्थ्य देखभाल केंद्रों में रोजगार के अवसरों में सुधार करने में सक्षम हुए हैं। इन पहलों ने आयुष क्षेत्र में उद्यमिता और साक्ष्य-आधारित अभ्यास को बढ़ावा देते हुए प्रशिक्षित मानव संसाधनों की उपलब्धता को मजबूत किया है। |
| **6.** | राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग | **पहलें-** राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) ने होम्योपैथी शिक्षा, अनुसंधान विन्यास और क्षमता निर्माण को मजबूत करने के लिए कई पहलें की हैं, जिनमें निम्नलिखित शामिल हैं:<br><br>i. अधिसूचित विनियमों के माध्यम से बीएचएमएस और एमडी (होम्योपैथी) कार्यक्रमों के लिए योग्यता-आधारित पाठ्यक्रम का कार्यान्वयन। |

| | | |
|---|---|---|
| | | ii. आयोग ने 7.12.2022 को होम्योपैथी स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम बीएचएमएस विनियमन को अधिसूचित किया है, जिसमें युवा शोधकर्ताओं को बढ़ावा देने के लिए स्नातक स्तर पर अनुसंधान पद्धति विषय को शामिल किया गया है।<br><br>iii. आयोग ने होम्योपैथी में अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए 1 दिसंबर 2023 को राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (होम्योपैथी में चिकित्सा अनुसंधान) विनियम 2023 को अधिसूचित किया है।<br><br>iv. भारत भर में होम्योपैथी पर अनुसंधान करने और उसे बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग ने होम्योपैथी शिक्षा बोर्ड के अंतर्गत एक होम्योपैथिक अनुसंधान विनियमन समिति का गठन किया है।<br>v. होम्योपैथी महाविद्यालय के प्रत्येक विभाग के लिए, होम्योपैथी में आधुनिक प्रगति, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने की कार्यप्रणाली (स्मार्ट-नोम) को विनियमन में शामिल किया गया है।<br>vi. आयोग ने होम्योपैथी अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद के वैज्ञानिकों के सहयोग से स्नातकोत्तर छात्रों और शिक्षकों के लिए अनुसंधान पद्धति प्रशिक्षण का आयोजन किया है।<br>vii. छात्रों और संकाय सदस्यों के बीच अनुसंधान उन्मुखीकरण को मजबूत करने के लिए होम्योपैथी अनुसंधान के केंद्रीय परिषद (सीसीआरएच) और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग। |

| | | |
|---|---|---|
| | | viii. होम्योपैथी शिक्षा में शासन, पारदर्शिता और गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए आयुष शिक्षा पोर्टल और अन्य शैक्षणिक प्लेटफार्मों सहित डिजिटल पहल शुरू की गई हैं।<br><br>**परिणाम-** राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग द्वारा शुरू की गई पहलों के परिणामस्वरूप रोजगार में वृद्धि हुई है। होम्योपैथी पाठ्यक्रमों के लिए योग्यता-आधारित पाठ्यक्रम लागू करने से शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने के लिए अधिक शिक्षण संकाय की आवश्यकता उत्पन्न हुई है। इस संबंध में, 100 बिस्तरों वाले अस्पताल सहित एक होम्योपैथिक मेडिकल कॉलेज में 12 पूर्णकालिक शिक्षकों की वृद्धि हुई है (न्यूनतम आवश्यक मानक 2024 के नए विनियमन के अनुसार 40 पूर्णकालिक शिक्षकों की आवश्यकता है, जबकि पहले 28 शिक्षकों की आवश्यकता थी)।<br><br>आयोग ने 7.12.2022 को होम्योपैथी स्नातक डिग्री पाठ्यक्रम बीएचएमएस विनियमन को अधिसूचित किया है, जिसमें सामुदायिक चिकित्सा विभाग में सांख्यिकीय सहायक की आवश्यकता के साथ स्नातक स्तर पर अनुसंधान पद्धति विषय को शामिल किया गया है।<br><br>राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (होम्योपैथी स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रम - होम्योपैथी में डॉक्टर ऑफ मेडिसिन) विनियम, 2024 में अनुसंधान पद्धति और जैवसांख्यिकी को शामिल करने के तहत एक एसोसिएट प्रोफेसर/प्रोफेसर - अनुसंधान पद्धति और जैवसांख्यिकी का पद सृजित किया गया है।<br><br>एनसीएच न्यूनतम आवश्यक मानक (एमईएस) विनियम, 2024 में प्रत्येक होम्योपैथिक कॉलेज के लिए एक पुरुष और एक महिला योग प्रशिक्षक की नियुक्ति का प्रावधान किया गया है। फार्माकोलॉजी और मनोविज्ञान विषयों के लिए |

| | | |
|---|---|---|
| | | अतिरिक्त शिक्षण स्टाफ की नियुक्ति से रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं।<br><br>आयुष एजुकेशन पोर्टल और अनुसंधान से संबंधित अन्य शैक्षणिक प्लेटफार्मों सहित डिजिटल पहलों ने आईटी पेशेवरों के रोजगार के अवसरों को बढ़ाया है। |
| **7.** | आयुर्वेद विज्ञान अनुसंधान के लिए केंद्रीय परिषद (सीसीआरएएस) | आयुर्वेद के वैज्ञानिक प्रमाण आधार को मजबूत करने और पारंपरिक ज्ञान को समकालीन विज्ञान के साथ एकीकृत करने के उद्देश्य से सरकार ने आयुष आधारित अनुसंधान, शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए कई पहलें की हैं। आयुष मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संगठन, केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (सीसीआरएएस), देश भर में फैले अपने 30 संस्थानों के नेटवर्क के माध्यम से अनुसंधान करता है। परिषद साहित्यिक, मौलिक, औषधि मानकीकरण, औषधीय, औषधीय प्रभाव सूक्ष्म जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी, औषधीय पादप, नैदानिक और जन स्वास्थ्य अनुसंधान सहित बहुविषयक अनुसंधान करती है। यह शास्त्रीय आयुर्वेदिक सूत्रों का प्रमाणीकरण भी करती है, साक्ष्य-आधारित नए उपचार विकसित करती है, दवाओं का मानकीकरण करती है और व्यापक जन स्वास्थ्य अनुप्रयोगों के लिए प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुगम बनाती है। अनुसंधान गतिविधियों को प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों के साथ सहयोग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, जीनोमिक्स और प्रोटिओमिक्स सहित उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने से समर्थन प्राप्त है। परिषद अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम, इंटर्नशिप, फैलोशिप और विभिन्न अनुसंधान प्रोत्साहन योजनाएं जैसे स्पार्क, अग्नि, प्रार्थना और पोस्ट-डॉक्टोरल फैलोशिप संचालित करती है। इसके अतिरिक्त, सीसीआरएएस आयुर्वेद में अनुसंधान, ज्ञान प्रसार और क्षमता निर्माण को |

| | | |
|---|---|---|
| | | बढ़ावा देने के लिए पुस्तकें, ई-पुस्तकें, डिजिटल संसाधन और अन्य शैक्षिक सामग्री प्रकाशित करता है। |
| **8.** | पीसीआईएम एवं एच | आयुष मंत्रालय की ओर से पीसीआईएम एंड एच समय-समय पर राज्य औषधि नियामकों/प्रवर्तन प्राधिकरणों, आयुष-मान्यता प्राप्त राज्य/केंद्र शासित प्रदेश औषधि परीक्षण प्रयोगशालाओं और एएसयू एंड एच दवाओं से जुड़े गुणवत्ता नियंत्रण/तकनीकी कर्मियों आदि के लिए क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है। |
| **9.** | आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) | **आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान** आयुर्वेद के क्षेत्र में सक्रिय रूप से अनुसंधान गतिविधियों में संलग्न है। यहाँ प्रतिवर्ष 90 डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त शोधार्थी और 33 डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त शोधार्थियों के शोध प्रकाशित किए जाते हैं। इनके अतिरिक्त, संस्थान में आईएमआर और ईएमआर परियोजनाएं भी संचालित की जाती हैं।<br><br>**परिणाम-** संस्थान के छात्र शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता जैसे विभिन्न क्षेत्रों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। |

रिलीज़ आईडी: 2290958